वर्तमान भरतनाट्यम नृत्य शैली में नाट्यशास्त्र के करण : विश्लेषणात्मक अध्ययन

1. प्रस्तुत शोध विषय पर शोध करने की आवश्यकता (Need for Research on this Topic) :–

भारत को अपने धार्मिक एवं सांस्कृतिक विविधता के कारण सम्पूर्ण विश्व पटल पर अपना एक अनूठा स्थान बनाने का गौरव प्राप्त है। हमारे प्राचीन वैदिक धर्मग्रन्थ, वेद, पुराण के साथ–साथ अन्य विभिन्न ग्रन्थ भारतीय शास्त्रीय कलाओं के प्रमुख स्रोत रहे हैं। प्रसिद्ध रामायण, महाभारत एवं विष्णुधर्मोत्तर पुराण आदि में भी अन्योन्याश्रित विविध कलाओं की अत्यन्त सुन्दर विवरण प्राप्त होता है।

समस्त कलाओं का पारस्परिक सम्बन्ध हमेशा से एक–दूसरे के पूरक होते हुए भी अपने सम्बन्धों को प्रभावित करता आया है। सदियों पहले लिखा गया नाट्यशास्त्र समस्त साहित्य, कला, संगीत एवं नृत्य कला का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है, किन्तु किसी कारणवश वर्तमान काल में भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैली में उसका प्रयोग अत्यन्त निम्न पाया जाता है। वस्तुतः यह भी देखा गया है कि यदि नाट्यशास्त्र के तत्वों का उपयोग कहीं होता भी है तो उसका शास्त्रों के अनुसार नियमबद्ध वर्तमान काल के नृत्यों में स्पष्ट रूप से प्राप्त नहीं होता। इसी कारण प्रस्तुत शोध कार्य करने की आवश्यकता उपस्थित हुई।

2. परिकल्पना (Hypothesis) :–

प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल के यात्रा में विविध परिवर्तन प्राप्त होते हैं। शोधार्थी इस शोध प्रबन्ध में आचार्य भरत कृत नाट्यशास्त्र तथा भरतनाट्यम् के वर्तमान स्वरूप का पारस्परिक सम्बन्ध दिखाना चाहती है। भरतनाट्यम् शैली में अभिनयदर्पण शास्त्र का प्रभाव ज्यादा देखने को मिलता है। नाट्यशास्त्र की यह ग्रन्थ जो कि भारतीय नृत्य कला का प्रथम दृष्टान्त है और उसी का आधार लेकर समस्त शास्त्रीय नृत्य शैलियों का जन्म हुआ है। अतः शोधार्थी की यह कल्पना है कि नाट्यशास्त्र के करणों का भरतनाट्यम् शैली में किस प्रकार प्रयोग किया गया है एवं किस प्रकार प्रयोग किया जा रहा है, उसे इस शोध कार्य के द्वारा उजागर किया जा सकता है तथा उन करणों के प्रयोग से भरतनाट्यम् नृत्य शैली में नवीन सम्भावनाएँ दिखाई जा सकती हैं।

3. दत्त संकलन एकत्रित करने की विधि (Data Collection) :–

- करणों की रचना और उसके ऐतिहासिक तथ्यों से सम्बन्धित अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से महर्षि भरतकृत नाट्यशास्त्र ग्रन्थ का अध्ययन एवं उसमें उल्लेख विविध पक्षों को समझने का प्रयास किया गया है, साथ ही साथ इस विषय से सम्बन्धित विभिन्न विद्वानों से प्रत्यक्ष रूप से साक्षात्कार करके तथा भरतनाट्यम् में उल्लेख करणों का प्रयोगकारी बनाते समय उनके अनुभव तथा विचारों की सहायता से तथ्यों को संकलन करने का प्रयास इस शोध प्रबन्ध में शोधार्थी द्वारा किया गया है।

- भारत के विभिन्न प्रान्त के ग्रन्थालयों से उपलब्ध अपने विषय से सम्बन्धित ग्रन्थों का अध्ययन कर शोध कार्य को अवलोकित करने का प्रयास किया गया है।
- इण्टरनेट से उपलब्ध अपने विषय से सम्बन्धित ऑडियो एवं विडियो आदि को देखकर तथा ऑनलाइन साक्षात्कार कर भरतनाट्यम् नृत्य में करण की नवीन, सुन्दर प्रयोगों के आंकड़े एकत्रित किए गए हैं।
- साप्ताहिक, मासिक तथा प्रसारित सामाचार पत्र–पत्रिकाओं में उपलब्ध विभिन्न लेखों का अवलोकन भी शोध प्रबन्ध के लिए किया गया है।
- विद्वत् गुरुजनों का स्वयं साक्षात्कार करके विषयगत जानकारी प्राप्त किया गया और विषय से सम्बन्धित विद्वत्जनों से उनके द्वारा दिए गए भिन्न–भिन्न मतों को ध्वनि मुद्रित तथा ध्वनि चित्रित के माध्यम से भी तथ्यों को संकलित करने का प्रयास इस शोध प्रबन्ध में किया गया है।
- करणों की विभिन्न मुद्राओं को स्वयं प्रयोग कर छायाचित्र के माध्यम से शोध कार्य में उनके श्लोक सहित दर्शाने का प्रयास किया गया है।
- डॉ0 पद्मा सुब्रह्मण्यम जी के शोध कार्य को समझते हुए भरतनाट्यम में प्रयोग किए जाने वाले करणों की जानकारी के स्रोत के रूपरेखा तैयार किया गया।
- करणों से सम्बन्धित उपलब्ध ग्रन्थों का संशोधन किया गया।

4. पुनर्विलोचन (Review of Literature) :–

प्रस्तुत विषय में सम्बन्धित आंकड़े एकत्रित करने के पश्चात् सबका पुनर्विलोकन किया गया है और त्याज्य आंकड़ों को छोड़ दिया गया है तथा सम्बन्धित तथ्यों को इस शोध प्रबन्ध में विश्लेषणात्मक रूप से प्रस्तुत करने का पृथक प्रयास किया गया है।

5. उद्देश्य (Objective) :–

भरतनाट्यम नृत्य एक विशुद्ध शास्त्रीय एवं अत्यन्त ही लोकप्रिय नृत्य शैली है। इसके ऐतिहासिक पक्ष की ओर दृष्टिपात किया जाये तो प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक के यात्रा में विविध परिवर्तन देखने को मिलता है। भरतनाट्यम् की अलग–अलग शैलियों/बानी/घराने हैं, जिसकी अपनी–अपनी विशेषताएँ हैं। जिसके अनुसार करणों का प्रयोग किस प्रकार होता आया है तथा किस प्रकार किया जा सकता है, इन दोनों पक्षों को विशेष से विवेचन करने की कोशिश की गई है।

6. शोध कार्य पद्धति एवं योजना (Research Methodology and Planning):–

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ऐतिहासिक एवं प्रयोगनिष्ठ शोध कार्य पद्धति पर प्रस्तुत किया गया है तथा इसके अन्तर्गत प्रयोगनिष्ठ तत्वों का संकलन करके इन्हें प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत संशोधन के लिए इस विषय से सम्बन्धित कई विद्वानों के प्रत्यक्ष रूप से साक्षात्कार करके जानकारी प्राप्त की गई और कई विद्वानों से तथ्यों को प्रस्तुत करने के लिए प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। इस विषयानुसार तथ्यों को एकत्रित करने के लिए नृत्य के विभिन्न कलाकार एवं गुरुओं का योगदान और अनुभवपूर्ण विचार इस शोध

प्रबन्ध में समावेश करने का प्रयत्न किया गया है। इसके साथ ही नृत्य के सम्बन्ध में अनेक ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार इसकी सहायता भी तथ्यों को संकलन करने के लिए की गई है। मेरा प्रयास है कि इस कार्य पद्धति के अन्तर्गत तथ्यों का सरलीकरण हो सके जिससे नृत्य के शोधार्थियों को यह शोध कार्य में सहयोग मिल सके। इस शोध प्रबन्ध को विभिन्न स्थाई अध्यायों में विभाजित किया गया है, जो निम्न प्रकार हैं–

प्रथम अध्याय : नाट्यशास्त्र का परिचयात्मक अध्ययन

कला का उत्कृष्ट रूप काव्य है और इसका प्रतिपादक सर्वप्राचीन भारतीय ग्रन्थ भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र है। नाट्यशास्त्र भारतीय कला का एक प्रसिद्ध प्राचीन विश्वकोश ग्रन्थ है, इसे सम्भवतः नृत्य, संगीत का सबसे प्राचीन एवं प्रमुख ग्रन्थ माना गया है। इसमें अंकित 36 अध्यायों में नाट्य की उपासना की चर्चा क्रमानुसार की गयी है। प्रथम अध्याय में मंगलाचरण से शिव का स्मरण करते हुए सभी देवी–देवताओं के आग्रह पर पंचम वेद की रचना कर नाट्यवेद का निर्माण किया है। द्वितीय अध्याय में नाट्यमण्डप का वर्णन अत्यन्त गहनतापूर्ण किया गया है। तृतीय अध्याय में रंगमंच एवं उससे जुड़ी सभी छोटी–बड़ी बिन्दुओं को बतलाया गया। चतुर्थ अध्याय में अंगहार एवं 108 करणों का प्रयोग, पूर्वरंग की चर्चा की गई है। पंचम अध्याय को पूर्वरंग के लक्षण तथा विभाग, गीत–संगीत विधि, नान्दी तथा ध्रुवाओं का विवरण मिलता है। छठें अध्याय में रस, भाव, रस निष्पत्ति का विवेचन किया गया है। सातवें अध्याय भाव, विभाव, स्थाई भाव, संचारी भाव पर आधारित है। आठवें अध्याय में चार पंक्तियां ही गद्यमय होने के साथ–साथ शेष पंक्तियाँ पद्य में हैं परन्तु

यह अध्याय उतना ही महत्वपूर्ण एवं कतिपय है। 9वें से 13वें अध्याय पर आंगिक अभिनय की चर्चा की गई है, साथ ही साथ हस्त, कटि, पाद, शरीर के प्रमुख अंगों की भूमिका नृत्य में विशेष क्यों है पर प्रकाश डाला गया है। चौदहवें अध्याय से बाइसवें अध्याय तक वाचिक अभिनय एवं उससे जुड़ी मुख्य बिन्दुओं पर सम्बन्धित अवधारणाओं पर विशेष चर्चा की गई है। तेईसवें अध्याय में आहार्य अभिनय का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। चौबीस से तीस तक के अध्यायों में गीत वाद्य एवं वाद्य यन्त्रों की विशेषता बताई गई हैं और तीसवें अध्याय बाँसुरी वाद्य को प्रमुख स्थान पर रखते हुए, वाद्यों की रचना, उंगलियों के संचालन एवं विधि पर ध्यान दिया गया है। एकतीसवें अध्याय से ताल लय की सूक्ष्मता एवं लास्य के लक्षण इत्यादि बताए गए हैं। बत्तीस से तैतीस अध्याय जाति प्रधान, वादन विधि, उत्पत्ति, लक्षण पर चर्चाएँ की गई हैं। चौतीस से छत्तीस अध्याय में पात्र, पात्रों की वेश–भूषा, इतिहास एवं विज्ञान के लोकप्रिय करणों का विवरण दिया है। नाट्यशास्त्र की सामग्री को संक्षिप्त में निम्नानुसार किया गया है। नाट्यकला के स्वरूप, तत्व तथा प्रवृत्ति की चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्याय : नाट्यशास्त्र में दिए गए आंगिक अभिनय का वर्णन :–

नाट्यशास्त्र के तत्वों के पश्चात् इसमें की गई आंगिक अभिनयों का विस्तारपूर्वक वर्णन प्राप्त होता है। नाट्यशास्त्र के चतुर्थ अध्याय को विस्तृत कर उसमें दिए गए आंगिक अभिनय के मूल तत्वों को प्रदर्शित किया गया है, जिसमें मूलतः अंगहार, रेचक को स्पष्ट करते हुए शरीर के छोटे–बड़े सभी अंगों के सूक्ष्म नाम को बताया गया है। हस्त मुद्राओं के साथ पाद चारी,

मण्डल, पिण्डी बन्ध, मण्डल लक्षण इत्यादि की चर्चा करते हुए इसके प्रयोग को नाट्यशास्त्र में किस विधि के साथ बताया गया है, इस पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। नृत्य में नृत्त शरीर की लयबद्ध गतिविधियों को सन्दर्भित करता है। यह मुखमण्डल की अभिव्यक्ति का उपयोग नहीं करता। नृत्य के जिस पहलू से रस और भाव का संचार होता है, उसे नृत्य कहा जाता है। नाट्य और नृत्य का उद्देश्य, विचार, विषय, भावनाओं को चित्रित किया गया है। अभिनय एक तकनीक है, जिसके चार प्रकार बतलाए गए हैं। यह भी कहा जा सकता है कि नृत्य के यह चार महत्वपूर्ण अंग हैं। इसके नाम आंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक अभिनय है। नाट्यशास्त्र के आठ से तेरह अध्याय में मुख्य रूप से आंगिक अभिनय का विवरण किया गया है। इसमें शरीर के प्रत्येक पहलू के साथ अंग और उपांग का वर्णन नाट्यशास्त्र में दिया गया है। भरतमुनि ने अलग–अलग भौं, नाक, गाल, ओंठ के प्रकार और उसके संचालन को दर्शाया है। ठुड्डी के प्रयोग एवं गति, इन आंगिक अभिनयों के संचालन से नृत्य में सहायता प्राप्त होने के साथ यह कथा या कृतियों को सौन्दर्यता प्राप्त कर शारीरिक हलन–चलन और सुन्दर के साथ बदलाव स्थापित करती है।

तृतीय अध्याय : करण का परिचायात्मक अध्ययन :–

तृतीय अध्याय में ''करण'' का संकलन करते हुए नाट्यशास्त्र के श्लोकों के साथ श्लोक का विवरण दिया गया है। नृत्य में प्रयोग करने का क्या उद्देश्य रहा होगा? साथ ही मन्दिरों की विशेषता, उनके प्रकार एवं प्रमुख रूप से तीन मन्दिरों का विवरण बतलाया गया है। दक्षिण भारत के (नटराज, बृहदेश्वर, सारंगपाणि) मन्दिरों का वर्णन तथा उसमें अंकित मूर्तिकला एवं

उसके महत्वता को विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। मन्दिरों के उद्देश्य तथा मन्दिरों पर अंकित मूर्तियों के उद्देश्य पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है। नाट्यशास्त्र के करण का प्रयोग, उनके नाम तथा अंकों को मन्दिर के चित्रकला में कैसे, क्यों और किस काल में दर्ज किया गया है, इन्हीं विषयों पर यह सम्पूर्ण अध्याय समर्पित है।

नाट्यशास्त्र में अंकित 108 करणों को मन्दिरों पर अंकित चित्रों द्वारा देखा गया है। 108 करणों को भारत की समृद्ध नाट्य कला में निहित नृत्त तत्वों की अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। करण के माध्यम से शरीर की विभिन्न स्थितियों का सुन्दर समन्वय है, जो एकाकृत आकृति को प्रस्तुत करता है। नाट्यशास्त्र की तकनिकी शब्दावली से वर्तमान में नृत्य जगत् में करण की विशाल एवं गहन स्वरूप के स्थान पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय : भरतनाट्यम् का इतिहास :–

भरतनाट्यम् के इतिहास के अन्तर्गत सभी बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया। दासीअट्टम् के शागीर्द कचेरी तक और फिर भरतनाट्यम् तक के परिकल्पना को बताने का प्रयास किया गया है, भरतनाट्यम् का इतिहास यूं तो अत्यन्त विशाल सागर के समान है, इस इतिहास को जानना और समझना अत्यन्त कठिन है परन्तु येन् केन् प्रकारेण संक्षिप्त में इतिहास लिखने का प्रयास किया गया है। भरतनाट्यम् के इतिहास में मन्दिर के देवदासियों का अद्भुत योगदान अत्यन्त सराहनीय रहा है, गुरुजनों का प्रयास एवं उनके योगदान से भरतनाट्यम् नृत्य शैली की रूपरेखा हमें आज देखने को मिलती है।

तंजौर भाइयों का योगदान एवं उनकी शिव भक्ति आज भी परम्परागत काव्यों एवं साहित्य में देखने को मिलता है। भरतनाट्यम् के शास्त्रीय गुरुओं के अनुसार नृत्य के विभिन्न शैलियों में कुछ परिवर्तन हुए और उसे ही बानी (घराने) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मुख्यतः भरतनाट्यम् के पांच बानियां अत्यन्त प्रचलित हुई और प्रयोग के साथ–साथ उसके नियमों को समझने वाले कलाकारों ने इसके शिक्षण, प्रशिक्षण के द्वारा इसे साधारण जनसमाज में प्रचलित बनाया। इसके प्रचार–प्रसार के लिए मंच प्रदर्शन, कार्यशाला, नवीन रचना के साथ कलाकारों ने बानियों के अस्तित्व को जीवन्त रूप देने का पूर्ण प्रयास किया गया।

पंचम अध्याय : भरतनाट्यम् में करण का प्रयोग तथा सम्भावनाएँ

प्रत्येक भारतीय नृत्यशैली का जन्म नाट्यशास्त्र के आधार पर ही हुआ है। नाट्यशास्त्र के परावर्ती शास्त्रकारों ने भी अनेक शास्त्रों की रचना की है। इतीन सदियों में अनेक नृत्य शैलियाँ बनी और मिट गई होंगी। भरतनाट्यम् के विविध बानियों के विभिन्न लक्षणों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पौराणिक भरतनाट्यम् में करणों का प्रयोग किया जाता होगा। करण विषय को लेकर अब तक कई शोध कार्य हो चुके हैं, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण और सर्वप्रथम शोध कार्य को मान्यता मिलती है, वो डॉ0 पद्मा सुब्रह्मण्यम जी ने किया है, जिन्होंने अपने जीवन का लगभग 40 वर्ष तक का समय करणों के अध्ययन करते हुए उसे पुर्नजीवित करने में व्यतीत किया है। तत्पश्चात् उनके शिष्यों द्वारा इस परम्परा को आगे बढ़ाया जा रहा है और करण से जुड़ी

अलग–अलग पक्ष को लेकर के शोध कार्य शिष्यगणों द्वारा किए गए हैं। इसके साथ–साथ अन्य कई शोधकर्ताओं ने देशी करणों पर भी शोध कार्य किए हैं।

प्रस्तुत अध्याय का विषयवस्तु है, ''वर्तमान भरतनाट्यम् नृत्य शैली में करणों का प्रयोग'' तथा ''भविष्य में करणों से बनी सम्भावनाएँ''।

इतने वर्षों में विभिन्न कलाकारों, विद्वानों, शोधकर्ताओं द्वारा करणों का प्रयोग भरतनाट्यम् में जिस प्रकार से किया जा रहा है उसमें विभिन्न घराना/बानी या शैली के कलाकार हैं जिनकी अपनी कल्पनादृष्टि है तथा अपने विशेषताएँ हैं जिससे कि वो करणों का प्रयोग अपने–अपने नृत्य संयोजनों में कर रहे हैं। इस कारण प्रत्येक कलाकार का नृत्य अन्य कलाकारों से अलग जान पड़ता है। अतः इस शोध कार्य का उद्देश्य एवं शोधकर्ता का आशय यह है कि वर्तमान में विभिन्न दृष्टिकोण से तथा विभिन्न पक्ष को लेकर भरतनाट्यम् में जिस प्रकार करणों का प्रयोग किया जाता है। उससे भविष्य के नृत्य का फलक असीम होगा। ऐसी सम्भावनाएँ दिखाई पड़ रही है। भरतनाट्यम् जिस आधार पर, जिस सांचे में बांधी गयी है, उसके अन्दर नाट्यशास्त्र के करणों तथा अन्य तत्वों का प्रयोग उस स्वरूप को खुला अवकाश दे रहा है और सम्भवतः आने वाले भविष्य में इनके प्रयोग से भरतनाट्यम अपने मूल स्वरूप का परिवर्तित रूप ना होते हुए अनेक विशेषताओं से भर जायेगा।

जिस प्रकार कलाएँ या परम्परा परिवर्तनशील है, उसी प्रकार से विवेक, बुद्धि तथा कल्पनादृष्टि से करणों का प्रयोग भरतनाट्यम् के विभिन्न पक्षों में किया जाय तो भरतनाट्यम् नृत्य एक नये आयाम पर जा सकता है। नाट्यशास्त्र में भरतमुनि ने करण को नृत्त के लिए प्रयुक्त बताया है।

"हस्तपाद समायोः नृत्यस्य करणं भवेति।।"

अर्थात् हस्त तथा पाद से होने वाले शारीरिक हलन–चलन को करण बताया गया है, जो नृत्य के लिए प्रयुक्त माना गया है, किन्तु आज विभिन्न कलाकार, विद्वान्, शोधकर्ता करण को नृत्त के उपरान्त अभिनय पक्ष के लिए भी प्रयोग कर रहे हैं, जिससे न केवल अभिनय का विशेष स्वरूप दिखाई देने लगा है, अपितु वह और भी असरकारक लगने लगा है, शोधकर्ता ने वर्तमान के भरतनाट्यम् में करणों को प्रायोगिक पक्ष से जुड़े हुए कलाकार, विद्वान् तथा शोधकर्ताओं के कार्यों का अध्ययन किया, उनके साक्षात्कार किया तथा उनके द्वारा प्रयोग में लाए हुए पक्षों का बारीकी से निरीक्षण किया है। शोधकर्ता द्वारा इस अध्याय में ऐसी विभिन्न कलाकारों के मत भी प्रस्तुत किए गए हैं तथा भविष्य में इससे बनने वाली सम्भावनाओं में भी इसके विचारों पर प्रकाश डाला गया है।

पौराणिक या सबसे पुरातन नृत्य के इस स्वरूप (करण) का भरतनाट्यम् में प्रयोग एक नवीनीकरण के रूप में नृत्य जगत् के सामने आया है, जो केवल नृत्य से जुड़े कलाकारों को ही नहीं अपितु दर्शकों को भी प्रभावित कर रहा है। इन प्रयोगों से नृत्य के विद्यार्थियों को नाट्यशास्त्र में वर्णित पौराणिक स्वरूपों को जानने में एवं समझने में रूचि बढ़ती जा रही है।

सामान्य नियमानुसार किसी भी विधा में आने वाले बड़े परिवर्तनों को आलोचनाओं का सामना करना ही पड़ता है, उसी प्रकार आरम्भ में करण के भरतनाट्यम् में किए जाने वाले प्रयोग आलोचना के पात्र बने, किन्तु जैसे–जैसे उसके विभिन्न आयामों को भरतनाट्यम् के साथ प्रयोग में लाए जा रहे हैं

वैसे–वैसे उसकी लोकप्रियता में वृद्धि हो रही है और भिन्न–भिन्न पक्षों में संशोधन का भी अवसर मिल रहा है।

उपसंहार (Conclusion) :–

जिस प्रकार पुरातन संस्कृति परिवर्तनों के चक्र से निकलकर फिर से नवीन स्वरूप लेकर आती है, उसी प्रकार नाट्यशास्त्र में वर्णित नृत्य का पौराणिक स्वरूप, करण इतनी सदियों बाद फिर से पुर्नजीवित होकर अपनी–अपनी समझ और कल्पना को नवीन स्वरूप लेकर प्रचलन में आया है, जो इस शोध प्रबन्ध में नाट्यशास्त्र के तत्वों का बारीकी से अध्ययन किया गया है तथा अनेक विद्वानों के द्वारा दी गई विभिन्न मतों का निर्देशन भी निकाला गया है। इस पौराणिक स्वरूप नवीनीकरण को भरतनाट्यम् के क्षेत्र में बनने वाली सम्भावनाओं के विषय में कई विद्वानों से वार्तालाप भी किया गया है। तमाम शोध सामग्री, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नृत्य जगत् से जुड़े कलाकार, गुरुजनों, विद्वानों के मत तथा विचारों को देखकर तथा प्रायोगिक पक्ष पर हो रहे बदलावों का निरीक्षण करके शोध कार्य का उद्देश्य सिद्ध करने का प्रयास किया गया है। शोधकर्ता का आशय वर्तमान में भरतनाट्यम् क्षेत्र में होने वाले विविध प्रयोग तथा इन उपयोगों के द्वारा भविष्य में बनने वाली सम्भावनाओं पर प्रकाश डालना था, जो आने वाली पीढ़ी के लिए एक रूचिकर विषय बनकर आए तथा हमारी संस्कृति या परम्परा की जड़ तक जाने का प्रयास करें, एवं इस जड़ से निकले विराट स्वरूप का आकलन किया जा सके। इस शोध कार्य में आधारतल रहा है, गुरुजन एवं विद्वानों के मत एवं विचारों का अवलोकन एवं शोधकर्ताओं के दृष्टिकोण का इतिहासकारों तथा भरतनाट्यम् के उन

कलाकारों का जो करणों का प्रयोग वर्तमान समय में कर रहे हैं। शोधकर्ता का यह मानना है कि यह शोध कार्य भरतनाट्यम् क्षेत्र में आने वाली पीढ़ी के लिए लाभदायी होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

ग्रन्थों के नाम		ग्रन्थकार
1.	Nritta Manjari	Leela Row
2.	Bharatnatyam & its costume	G.S. Ghurye
3.	The Science of Bharat Natyam	Saroja Vidyanathan
4.	Reading Dance (The Birth of Choreology)	Rudole & Joan Benesh
5.	भरतनाट्यम् (भाग 1)	डॉ0 लक्ष्मीनारायण गर्ग
6.	Bharatnatyam of Global Stage	Smitha Reddy
7.	अभिनयदर्पणम्	डॉ0 अमृत उपाध्याय
8.	Abinaya-Candrika & Odissi Dance (Vol. 1)	Prof. Sushma Kulshrestha & Prof. A.C. Sarangi
9.	नाट्यशास्त्र (भाग 1, 2) (सचित्र)	बाबूलाल शुक्ल शास्त्री
10.	Balasaraswati	Dr. V.K. Narayana Menon
11.	Natyashastra	Ghosh Manmohan
12.	Rani, Kamla Nattuvangam Book I	Rani Kamala
13.	Creations	Mrinalini Sarabhai

14.	नटराज	कमल किशोर मिश्र
15.	Bharatnatyam A Reader	Devesh Soneji
16.	नृत्य और संगीत	रंजना निगम
17.	Jaina Pratima Vijnana	Maruti Nandan Prasads Tiwari
18.	Madhyakalin Bhartiya Murtikala	Marutinandan Tiwari & Kamal Giri
19.	Satvatarchana (Vasudev Saran Agrawal) (Janmashati Smriti Grantha)	Maruti Nandan Tiwari, Ed.
20.	Madhyakalin Bhartiya Pratima Lakshan	Maruti Nandan Tiwari
21.	Jain Kala Tirth : Devagarh	Maruti Nandan Tiwari
22.	Jain Art & Aesthetics	Maruti Nandan Tiwari
23.	Bilvapatra - Treasurer of Indian Art	Maruti Nandan Tiwari
24	Classical Indian Dance in Literature and the Arts	Kapila Vatsyayan
25.	Bharatnatya A Critical Study	B. Sathyanarayana
26.	Dancing Divinities in Indian Art	Sucharita Khanna
27.	Karanas Common Dance Codes on India and Indonesia	Dr. Padma Subrahmanyam
28.	Bharatmunipranitam	Dr. N.P. Unni

	Natyashastra	
29.	Natyashastra of Bharatmuni	Pushpendra Kumar
30.	श्रृंगारप्रकाशः	म.म. रेवाप्रसादो द्विवेदी 'सनातकनः'
31.	मन्दिर स्थापत्य का इतिहास	डॉ0 सच्चिदानन्द सहाय
32.	पुराणों में नृत्य के तत्व	डॉ0 नीता गहरवार
33.	Bharat Kalakshetra Theatre	R.V. Ramani
34.	कथक नृत्य शिक्षा	डॉ0 पुरू दाधीच
35.	भारतीय संगीत का इतिहास	डॉ0 शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे
36.	संस्कृति की मंदाकिनी	डॉ0 शंकर दत्त ओझा
37.	भारतीय ललित कलाएँ एवं नृत्यकला	डॉ0 सुषमा देवी गुप्ता
38.	भरतनाट्यम्, भाग–1	डॉ0 लक्ष्मीनारायण गर्ग
39.	Music and Bharatnatyam	S. Bhagyalaxmi
40.	संस्कृति की मंदाकिनी	डॉ0 शंकर दत्त ओझा